International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

जे. कृष्णमूर्ति के शैक्षणिक एवं दार्शनिक विचारों की वर्तमान में प्रासंगिता

प्रतिभा यादव

शोधार्थी शिक्षाशास्त्र जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर म.प्र. (भारत)

सारांशः
जे. कृष्णमूर्ति के अनुसार सम्यक शिक्षा वह है, जो मानव की पढ़ने–लिखने का ज्ञान, इंजीनियर, डॉक्टर, वकील इत्यादि व्यवसाय से संबधी तकनीकी ज्ञान तथा कार्य कुशलता के साथ–साथ जीवन की अखंड प्रक्रिया का अनुभव करने में भी मनुष्य की सहायता करे। शिक्षा का उद्देश्य किसी भी आदर्शों का अंधानुकरण करना नही है। बल्कि उसका उद्देश्य बालक को वास्तविकता अर्थात् प्रकृति तथा आस–पास के वातावरण के साथ समन्वय स्थापित करके, भय रहित उत्तम जीवन निर्वाह करने के लिये तैयार करना है।

मुख्य शब्दः जे.कृष्णमूर्ति, शैक्षणिक चिंतन, दार्षनिक चिंतन, राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली।

प्रस्तावनाः
हमारी शिक्षा प्रणाली में राष्ट्रीय भावना का सर्वथा अभाव है। इसलिये समय समय पर साहित्यकारों व शिक्षाविदों ने अनेक प्रकार के साहित्यों व कृतियों का सृजन करके शिक्षा के क्षेत्र में नवीन प्रगति की है। उन शिक्षाविदों में जे. कृष्णमूर्ति जी शिक्षा क्षेत्र में गणना आधुनिक युग के श्रेष्ठ विचारकों में होती है। शिक्षा से संबधित जो उनके विचार हैं वह बहुत ही महत्वपूर्ण एवं उपयोगी हैं। उनके विचार क्रांतिकारी थे उन्होंने प्रत्येक प्रकार को वाह्य प्रमाणिकता का विरोध किया, फिर चाहे वह व्यक्ति की हो या पुस्तक की हो। वह यथार्थ ज्ञान के पक्ष में थे। यथार्थ ज्ञान से उनका अभिप्राय "सत्य" के ज्ञान से था। और इस सत्य तक पहुॅचने का साधन शिक्षा को माना है। उनका मानना था कि इस सत्य अथवा यथार्थ तक व्यक्ति स्वंय ही अपने प्रयास से पहुंच सकता है ना कि व्यक्ति, ग्रंथ या पुस्तक के माध्यम से। यह तो उनका मार्गदर्शन ही कर सकते हैं। प्रयत्न तो व्यक्ति को स्वंय ही करना होगा। जे. कृष्णमूर्ति अपने समय के प्रचलित ढ़ांचे से सहमत नहीं थे।

जे.कृष्णमूर्ति ने शिक्षक के साथ–साथ माता–पिता विद्यालय व घर को भी बालक के उत्तम विकास के लिए उत्तरदायी माना है। जिड्डू कृष्णमूर्ति एक महान सन्त, महान चिन्तक, महान शिक्षाविद व त्यागी महापुरूष थे। उन्होंने अपना पूरा जीवन शिक्षा के चहुॅमुखी विकास एवं समाज की सेवा में लगा दिया इसलिये उनके जीवन, उनके कार्यों एवं उनके शिक्षा संबंधी विचारों का संकलन एवं प्रस्तुतीकरण निश्चित ही वर्तमान शैक्षिक समस्याओं के संदर्भ में बहु उपयोगी है।

दार्शनिक चिंतनः जे.कृष्णमूर्ति के अनुसार– ''दर्शन जीवन के लिये प्रेम, प्रज्ञा के लिये प्रेम, जाग्रत करता है। दर्शन व्यक्ति की उसके वास्तविक स्वरूप का बोध कराता है और अपना अस्तित्व क्या है। वाह्य एवं आंतरिक संसार में होने वाले प्रत्येक स्प्रन्दन का प्रशिक्षण बोध होना वास्तविक दर्शन है। ''कृष्णमूर्ति किसी भी धर्म ग्रन्थ या शास्त्र के अनुसार संस्कार या कर्म को स्वीकार करते हुऐ स्वतंत्रता और संवेदनाशीलता के साथ विवेक और प्रज्ञा से प्रेरित कर्म को स्वीकार करते हैं। सत्यान्वेषण और आत्मानुसंधान ही जीवन का परम लक्ष्य निर्धारित करते हैं, न कि मोक्ष का।

तत्व मीमांसा आध्यात्म सम्बन्धी विचारः जे. कृष्णमूर्ति जी का व्यक्तित्व परमात्मा की सत्ता को मानने वाला था। उनका ऐसा मानना था कि उस अनुभूति को विचारों द्वारा सम्पादित नहीं किया जा सकता है। वह परमात्मा शब्द पर कोई बल नही देते हैं, उनका मत है न तो ईश्वर है शब्द ही ईश्वर है, न मंदिर आदि में रखी गयी ईश्वर प्रतिमा भी ईश्वर नहीं है। मानव जाति तरह–तरह के विश्वासों में आता रहता है। जबकि यह मंदिर और मूर्ति मनुष्यों द्वारा निर्मित है और मनुष्य इन सबका उद्भव करके स्वंय इनमें फंस गया है। कृष्णमूर्ति का मानना था कि ईश्वर असीम अनन्त है। उस परमात्मा को मन्दिर में कैद नहीं किया जा सकता है। जो ईश्वर मन्दिर में बंद है वो हमारे जीवन के लिये मिथ्या है। यह लोक किदविन्तीयाँ है। उस ईश्वर को प्रतिमाओं के रूप में महिमा मण्डित नहीं किया जा सकता है। वास्तविक रूप में ईश्वर सर्वज्ञ विद्यमान है। कृष्णमूर्ति का दर्शन सभी प्रकार की मान्यताओं, विश्वासों और तुलनाओं से उठकर वास्तु के वास्तविक रूप में देखने के लिये प्रेरित करता है।

जे. कृष्णमूर्ति का दर्शन माननीय समस्याओं पर विचार करने व उसके निराकरण को प्रस्तुत करने वाला यथार्थवादी दर्शन है। जे. कृष्णमूर्ति के अनुसार ''धर्म का अर्थ किसी भी प्रकार की प्रबुद्धता नहीं हैं। धर्म परम शांति की एक अवस्था है। जिसमें सत्यता है। वही परमात्मा है। कृष्णमूर्ति का एक भाव उद्देश्य था कैसे मुनष्यता से मुक्त होकर शाश्वत आनंद में की समाधि लग जावें। जहॉ न किसी प्रकार दुख और न चिंता का अवबोध न हो।

मनस सम्बन्धी विचारः कृष्णमूर्ति का मनस संबधी विचार भारतीय दर्शन में मनस के स्वरूप से एक दम भिन्नता है। उनका मानना है सामन्यताः जिसे मनुष्य मनस को रूप में जानता है। वह अहंकार के रूप होता है। मनस व्यक्ति की सभ्यता संस्कृति उपेक्षा और आकांक्षा का परिणाम है। मनस के बारे में संसार में ऐसा विचार बन गया है। वह इस भौतिक शरीर जो नाशवांन है। इससे अलग कोई अमरत्व नहीं है। जो अधिक महान है और व्यापक है, अक्षय है, अमर है। कृष्णमूर्ति का विचार है मनस एक विचार जगत है।

ज्ञान मीमांसाः– मानव में वैचारिक चिंतन एवं मनन होने की क्षमता उन्हें अन्य प्राणियों से अलग एवं श्रेष्ठ बनाती है। अपनी वैचारिक क्षमता से ही व्यक्ति महत्वपूर्ण सिद्वान्त का प्रतिपादन करने में सक्षम है। यह ज्ञान वैचारिक क्षमता का परिणाम है। सामान्य मनुष्य से लेकर विद्वान एक दूसरे के अनुमानों को गृहण करते हैं। इस प्रकार अनुभव संग्रहण का उप नाम ज्ञान है। ज्ञान के तीन स्वरूप हैं।

1ण **वैज्ञानिक ज्ञानः–** क्रमवद्व एवं व्यवस्थित ज्ञान को वैज्ञानिक ज्ञान के नाम से जानते हैं। वैज्ञानिक ज्ञान में गणितीय, ऐतिहासिक एवं भाषा शास्त्रीय ज्ञान की प्रमुखता है। यह सभी विषय का ज्ञान तथ्यों के विश्लेषण के आधार पर होता है।

2ण **सामूहिक ज्ञान :–** यह प्रकार ज्ञान परम्परागत ज्ञान पर आधारित है। यह ज्ञान अपने अनुभव से पीढ़ी दर पीढ़ी स्थानांतरित होती है। यह ज्ञान सामूहिक प्रकृति से होता है।

3ण **व्यक्तिगत ज्ञानः–** सृजनात्मक ज्ञान व्यक्ति के व्यक्तिगत ज्ञान पर आधारित है। संवेदनशीलता और ज्ञान के अभाव में किसी चीज का स्पष्ट बोध नहीं होता है। वास्तविक ज्ञान सत्ता का प्रतीक होता है। ज्ञान के द्वारा ही व्यक्ति कुशल मार्गदर्शन करने में सहायक होता है।

- **सत्य–** कृष्णमूर्ति के अनुसार सत्य एक पथहीन भूमि है। सत्य तक पहुॅचने के लिये कोई राजमार्ग नहीं सत्य व्यक्ति के अन्तनिर्हित अनुभूति का विषय है।
- **दुख और दुःख का भोगः–** भूत और भविष्य की स्मृति दुःख का कारण होती है। जबकि कष्ट का सम्बन्ध व्यक्ति शरीर है। जबकि दुःख एक मानसिक पीढ़ा है। जबकि शरीर व्याधि का चिकित्सीय औषधि के द्वारा उपचार किया जा सकता है। परन्तु मानसिक पीढ़ा को पहचानने के लिये व्यक्ति को मनोविज्ञान का ज्ञान होना चाहिये।
- **भयः–** भय मानव मन की गम्भीर बीमारी है। भय का कारण जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में होने वाली प्रतियोगिताऐं एवं अनिश्चितायें होती हैं। आत्म ज्ञान होने पर भय से मुक्ति मिलती है।

- **मृत्युः–** मृत्यु से मानव भयभीत होता है। मानव को एक ज्ञान नहीं है, जीवन का महत्व 1. मन की मृत्यु 2. शरीर की मृत्यु एक शाश्वत सत्य है। जबकि मन की मृत्यु वास्तविक है।
- **बुद्विः–** जब हम किसी संवेदनशीलता एवं चयनात्मक प्रतिस्पर्धा से गुजरते हैं तो अवलोकन प्रत्यक्ष ज्ञान है। इस प्रकार के ज्ञान को जे.कृष्णमूर्ति ने प्रज्ञा माना है।
- **ध्यानः–** जे.कृष्णमूर्ति जी के अनुसार ध्यान का अर्थ विचार का अन्त होना जबकि ध्यान साधन एवं साध्य होना है। ध्यान मन की वह अवस्था है। जिसमें मन प्रत्येक जीव को पूर्ण होने के सत्य समग्रतापूर्ण देखता है। ध्यान मन की भ्रांतियों से दूर और सत्य एवं परमानन्द की अवस्था में है।
- **मूल्य मीमांसाः–** जे. कृष्णमूर्ति के विचार सर्व जगत के कल्याणकारी थे। उनका जीवन का उद्देश्य भारतीय एवं पाश्चात्य दोंनो परम्परायुक्त थी। उन्होंने सम्पूर्ण विश्व की मानवीय समस्याओं का अनुभव किया। भौतिक संसाधन होने पर भी सुखी नहीं है। वह तृष्णा द्वेष के बोझ से दवा हुआ है। व्यक्ति बाहरी विकास के साथ–साथ आंतरिक विकास को महत्व दिया है। उनका मुख्य उद्देश्य समाज को विकास हर सम्भव हो। उनका महत्वपूर्ण विचार था जिसमें सादगी, प्रेम सहयोग की भावना हो। जिसमें जाति, धर्म समाज, संस्कृति आदि के आधार पर विभेदन होता है तथा सभी सहयोग एवं प्रेम की भावना में एक विचारधारा में रहे।
- **जे. कृष्णमूर्ति के शब्दों मेंः–** मेरे जीवन का एक मात्र उद्देश्य लोगों को उस मुक्ति आनन्द को प्राप्त करना है, जिन्हें मैं स्वंय प्राप्त कर चुका हूँ। यह सम्पूर्ण मानवता का अंतिम लक्ष्य है।''
- **शैक्षिक विचारः–** शिक्षा का सम्प्रत्ययः वास्तविक शिक्षा वह है। जो आत्मानुभूति कराये। अतः मनस ज्ञान की शिक्षा है। कृष्णमूर्ति का विचार था शिक्षा के माध्यम से मानव का विकास सम्भव है। शिक्षा का वास्तविक अर्थ सत्य की खोज करना है और मनस रूणिगत विचारों को दूर करना है। मनुष्य को स्वंय को पहचानना, कार्य सम्पूर्ण मन से करना, हृदय से करना है और कार्यशक्ति में निरन्तर वृद्वि करना, मेद्या का उद्घाटन करना, समन्वित सम्यंक दृष्टिकोंण को जागत करना, धर्म के वास्तविक स्वरूप को समझना, अधिगम की कला है। कृष्णमूर्ति ने ''लाइफ अहेड'' में कहा है ''सम्यक् शिक्षा और सम्यक् विकास में सीखना सबसे महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। उन्होंने सीखने के अर्थ को स्पष्ट करते हुये कहा है। सीखने का तात्पर्य केवल जानकारी का संग्रह नही बल्कि गहन समझ होना है।
- **शिक्षा का उद्देश्यः–** कृष्णमूर्ति के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य सही रिश्तों की स्थापना केवल व्यक्तियों के बीच ही नहीं बल्कि व्यक्ति और समाज के बीच भी होती है। यह आवश्यकता है कि शिक्षा सबसे पहले अपने मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया को समझने में सहायक हो। शिक्षा का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को अधिक संवेदनशील बनाना।
- **जे.कृष्णमूर्ति के अनुसारः–** विद्यार्थियों में वातावरण के प्रति समन्वय का भाव प्रति स्थापित करना। यह एक प्रकार की संवेदनशीलता में घृणा, क्रोध, द्वेष, क्रोध और हिंसा का कोई स्थान नहीं है। शिक्षा के प्रमुख उद्देश्य हैः–
- **सामाजिक विकासः–** व्यक्ति समाज का अभिन्न अंग है। व्यक्ति का विकास समाज में होता है और वह सभी आवश्यकताओं की पूर्ति समाज में रहकर करता है। समाज का उत्तरदायित्व निरवहन करना, प्रत्येक व्यक्ति की जिम्मेदारी है।
- **सांस्कृतिक विकासः–** कृष्णमूर्ति के अनुसार शिक्षा का मुख्य उद्देश्य प्रत्येक मानव में मानवीय गुणों का विकास करना है। शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य में ऐसी शक्ति एवं अन्तः चेतन की वृद्वि करना है। जिससे वह पूर्वाग्रहों और पूर्व धारणाओं के विपरीत दृढ़तापूर्वक खड़ा हो सके नवीन मूल्यों एवं नवीन संस्कृति का निर्माण कर एकीकृत मानव का विकास कर सके।
- **परमात्मिक मूल्यों का विकासः–** परमात्मिक मूल्यों का विकास करने से तात्पर्य बालक के आध्यात्मिक मूल्यों को विकसित करना है। बोध का विकास, नैतिक मूल्यों का विकास के द्वारा ही परमात्मिक मूल्यों का विकास सम्भव है। इनकी प्राप्ति के लिए आंतरिक स्वतंत्रता, आंतरिक शांति, आत्मानुशासन, धैर्य एवं ज्ञान को अनिवार्य मानते हैं।

- **मानसिक विकासः–** शिक्षा का उद्देश्य बालक को दिए जाने वाले विभिन्न ज्ञान के साथ साथ उसके मन को परम्पराओं को बोझ से स्वतंत्र करना भी है। जिससे नवाचारयुक्त अनुसंधान करने में सक्षम हो सके।
- **शारीरिक विकासः–** स्वस्थ्य शरीर के लिये स्वस्थ्य मन का होना आवश्यक है। कृष्णमूर्ति का विचार, बालक के शारीरिक विकारों को स्वतंत्र करना भी है। जिससे वह अविष्कारों एवं शोध करने में समर्थ हो सके।
- **सृजनात्मकता का विकासः–** सृजनात्मकता का अर्थ शरीर, मन, आत्मा की सृजनशीलता से है। विद्यार्थियों के विचारों की स्वतंत्रता से सुखद वातावरण उपलब्ध कराना चाहिये। विद्यार्थियों में सृजनात्मक गुणों का विकास हो सके। अपने मनस के माध्यम से कुछ नया करने की क्षमता का विकास हो सके
- **शिक्षण विधियां:–** जे.कृष्णमूर्ति के अनुसार विघार्थी के सम्पूर्ण विकास के लिये निम्नलिखित शिक्षण विधियां आवश्यक है।

1. व्याख्यान विधि
2. श्रवण विधि
3. मनन विधि
4. निद्विय्यासन विधि
5. स्वाध्याय विधि
6. अवलोकन विधि
7. वार्तालाप विधि
8. दृष्टान्त विधि
9. प्रयोग विधि

अध्यापकः– अध्यापक को एकीकृत मानव होना चाहिए। विद्यार्थियों के साथ सौहार्दपूर्ण व्यवहार करना चाहिए। अध्यापक में धैर्य होना आवश्यक है। विद्यार्थियों को सीखने के लिये अनेक संसाधन खोजते रहना चाहिये। गुरू में समाज का भविष्य छिपा होता है। अध्यापक ही उत्तम नागरिक और जिम्मेदार व्यक्तित्व का निर्माण करता है।

विद्यार्थीः– कृष्णमूर्ति बालक के व्यक्तित्व का सम्मान करते थे। छात्रों में नवचेतना उत्पन्न करने का प्रयास करते थे। विद्यार्थी के अन्दर स्वंय का निर्णय लेने एवं तर्क शक्ति को विकसित करने की क्षमता उत्पन्न करना ताकि कठिन समय में अपने शैक्षणिक अनुभव से जीवन की हर समस्या से संघर्ष करने की क्षमता विकसित करना।

शिक्षक–विद्यार्थी सम्बन्धः– अध्यापक का दायित्व केवल शिक्षण कार्य तक ही सीमित नहीं है। मुख्य उत्तरदायित्व विद्यार्थी में सकारात्मक शक्ति को प्रज्वलित करना और शुभ प्रेरणा का भण्डार भरना। विधार्थी जब नैतिक कार्यों की और पथ ग्रस्थ होता है तो उसके सिर पर गुरूहस्थ होता है। वह अपना ही नहीं बल्कि समाज का कल्याण करने में सहायक होता है।

निष्कर्षः– जे. कृष्णमूर्ति ने समाज में एक समावेशी दृष्टिकोण उत्पन्न किया वे एक भयमुक्त समाज का निर्माण करना चाहते थे। मानवीय गुणों को विकसित कर समग्र, एकात्मक व्यक्ति का विकास किया। विद्यार्थी में समस्त अन्तर्निहित शक्तियों को विकसित करने का प्रयास किया। उनका योगदान जीवन मूल्यों की खोज में सहायक हो। उन्होंने विद्यार्थियों में आत्मबोध उत्पन्न करने की शिक्षा पर प्रवल प्रयास किया। छात्रों में सृजनात्मक शक्ति एवं चिन्तनशील ज्ञानार्जन शक्ति के विकास पर बल दिया। व्यक्ति का समाज के साथ उचित संवर्धन पर भी विशेष प्रभाव दिखा और आत्मिक प्रेम भाव की बात की गयी। उनकी शिक्षा का असर समाज में फैले द्वैष धारणायें पर नियंत्रण करना है। बालकों में स्वतंत्र चिन्तन को जाग्रत करने के प्रयास में सहायक बना है। पाठ्यक्रम में व्यक्ति स्वंय अपने जीविकोपार्जन की क्षमता विकसित करने की बात कही गयी। अध्यापक को शिष्ट एवं संस्कारवान बनाने की बात कही गयी है। विधार्थियों को सत्य एवं समुचित विचारधारा के साथ संग्रहित होना चाहिये। जे.कृष्णमूर्ति ने भयमुक्त शिक्षा देने की बात की है। सहशिक्षा देने के पक्ष में थे। शिक्षा के क्षेत्र में आनुभाविक एवं प्रायोगिक कार्यों पर बल दिया। अतएव इनके दर्शन में समाज को अतुल्यनीय सहयोग मिला जो कि प्रशंसनीय है। यदि अन्य दर्शनों में धार्मिकता के संदर्भ में विवेकानन्द, बुद्ध, महावीर आदि दार्शनिकों पर तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है। वे एक यथार्थवादी शिक्षाविद् के आध्यात्मिक गुरू के रूप में चिरस्मरणीय रहेंगे।

संदर्भ ग्रन्थः–

1. **कृष्णमूर्ति जे•** 'जिसने अपनी आत्मा खो दी है' कृष्णमूर्ति फाउंडेशन इंडिया, राजघाट वाराणसी।
2. **कृष्णमूर्ति जे•** 'प्रथम और अन्तिम मुक्ति' मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।
3. **कृष्णमूर्ति जे•** 'मानवता का भविष्य' कृष्णमूर्ति फाउंडेशन इंडिया, राजघाट वाराणसी 2004।
4. **कृष्णमूर्ति जे•** 'ध्यान में मग्न' कृष्णमूर्ति फाउंडेशन इंडिया' राजघाट वाराणसी 2002।
5. **कृष्णमूर्ति जे•** 'अंतिम वार्ताए'' कृष्णमूर्ति फाउंडेशन इंडिया' राजघाट वाराणसी 2003।
6. **कृष्णमूर्ति जे•** "जीवन की पुस्तक" कृष्णमूर्ति फाउंडेशन इंडिया' राजघाट वाराणसी 2003।
7. **परिसंवाद अंक** 'जनवरी मार्च' कृष्णमूर्ति फाउंडेशन इंडिया, राजघाट वाराणसी 2005।
8. **परिसंवाद अंक** 'जुलाई से सितम्बर' कृष्णमूर्ति फाउंडेशन इंडिया, राजघाट वाराणसी 2006।
9. **परिसंवाद अंक** 'दिसम्बर' कृष्णमूर्ति फाउंडेशन इंडिया' राजघाट वाराणसी 2007।
10. **परिसंवाद अंक** 'सितम्बर' कृष्णमूर्ति फाउंडेशन इंडिया' राजघाट वाराणसी 2007।
11. **भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका रजत जयंती विशेषांक**, 'जुलाई–दिसम्बर' कृष्णमूर्ति फाउंडेशन इंडिया' राजघाट वाराणसी 2006 लखनऊ।
12. **कृष्णमूर्ति जे•**.'एक जीवन परिचय एवं रचनायें' जे.कृष्णमूर्ति फाउंडेशन इंडिया, राजघाट वाराणसी 2007।
13. **अग्रवाल,सरस्वती**:'जे. कृष्णमूर्ति का शिक्षा दर्शन' परिप्रेक्ष्य वर्ष 2015' अंक 2
14. **शर्मा, आर.ए**. 'शिक्षा अनुसंधान' आर.लाल बुक डिपो।
15. **सिंह कुमार अरूण** 'मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध प्रविधियां ' मोतीलाल बनारसीदास।
16. **श्रीवास्तव डी•एल•**: अनुसंधान विधियां, साहित्य पब्लिकेशन, आगरा
17. **कृष्णमूर्ति जे•** शिक्षा संवाद छात्रों और शिक्षकों से, जे.कृष्णमूर्ति फाउंडेशन इंडिया, राजघाट वाराणसी।